अंक 14

वर्ष 2024

टी.ई.सी
संचारिका
वार्षिक गृह पत्रिका

आई.एस.ओ. 9001:2015

भारत सरकार
दूरसंचार विभाग
दूरसंचार अभियांत्रिकी केंद्र
खुर्शीद लाल भवन, जनपथ

हिंदी पखवाड़ा 2024

शुभारंभ

संदेश

प्रिय पाठकों,

दूरसंचार अभियांत्रिकी केंद्र की वार्षिक गृह पत्रिका "टी.ई.सी. संचारिका" का वर्तमान अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है ।

विश्व का प्रत्येक देश अपनी भाषा पर गर्व करता है । देश की सर्वांगीण उन्नति तथा अटूट एकता के लिए अपनी भाषा और संस्कृति ही सर्वश्रेष्ट माध्यम है । भारत की आजादी के लिए अपने जीवन का बलिदान देने वाले देशभक्तों ने यही कहा था कि हिंदी ही भारत की जनभाषा, संपर्क भाषा और राजभाषा बन सकती है । मेरा भी यही मानना है कि हिंदी समस्त भारतवासियों को एकजुट रखने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है । बस आवश्यकता यही है हम हिंदी पर गर्व करें, कार्यालयी कार्य करते हुए हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करें और दूसरों को भी ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित करें ।

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार और उसमें सृजनात्मक अभिव्यक्ति के लिए गृह पत्रिका एक महत्वपूर्ण माध्यम है । इस गृह पत्रिका में विभिन्न विषयों पर लेख समाहित है । सभी लेखक एवं सहयोगीगण बधाई के पात्र हैं ।

मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका हिंदी के प्रचार व प्रसार में निश्चित रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी तथा पाठकों के लिए सार्थक, उपयोगी एवं ज्ञानवर्धक सिद्ध होगी ।

तृप्ति सक्सेना
कार्यालय प्रमुख एवं वरिष्ठ उप महानिदेशक
दूरसंचार अभियांत्रिकी केंद्र

संपादकीय

प्रिय साथियों,

"टी.ई.सी. संचारिका" का चौदहवां अंक अपने पाठकों के समक्ष रखते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है ।

भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम है । वहीं निज भाषा मूल व आंतरिक अभिव्यक्ति का सार्थक व सरल माध्यम है । अपनी मातृभाषा या राष्ट्रभाषा में भाव अभिव्यक्ति जितनी गहरी और मर्मस्पर्शी हो सकती है उतनी अन्य भाषा में नहीं है । हमारे देश में हिन्दी ने न केवल राजभाषा होने का सम्मान पाया है बल्कि इसे संपर्क भाषा के रूप में भी गौरव प्राप्त है । इंटरनेट के इस युग में जहां बटन दबाते ही ढेरों कहानियां, लेख, सूचनाएं आदि गूगल के माध्यम से उपलब्ध है । पलक झपकते ही हर प्रसिद्द कवि, लेखक की कृति हमारे सम्मुख सुलभ है । परंतु इतना होते हुए भी पत्र-पत्रिकाओं व पुस्तक पढ़ने से मिलने वाले सुख एवं ज्ञान को अनदेखा नहीं किया जा सकता ।

दूरसंचार अभियांत्रिकी केंद्र एक तकनीकी कार्यालय है, इसके बावजूद हिंदी लेखन का प्रचलन बढ़ रहा है । मैं सभी रचनाकारों, पत्रिका के प्रकाशन में संरक्षक एवं मार्गदर्शक और सहयोगीगणों को बधाई देता हूं जिनके प्रयास से पत्रिका का यह नया अंक अस्तित्व में आया । यह पत्रिका निश्चय ही अधिकारियों और कर्मचारियों में सृजनात्मक और वैचारिक लेखन को बढ़ावा देने के साथ-साथ भारत सरकार की राजभाषा नीति के क्रियान्वयन में सहायक एवं उपयोगी सिद्ध होगी ।

आशा है, पाठकगण इस अंक को भी रोचक, ज्ञानवर्धक, उपयोगी एवं सुरुचिपूर्ण पाएंगे । प्रबुद्द पाठकों के सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी

शिव नारायण
उप महानिदेशक (एन.जी.एन.)
दूरसंचार अभियांत्रिकी केंद्र

हिंदी दिवस 2024

के अवसर पर

माननीय गृह मंत्री जी

का संदेश

राजभाषा विभाग

गृह मंत्रालय, भारत सरकार

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

प्रिय देशवासियो!

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

इस वर्ष का हिंदी दिवस समारोह विशेष है, क्योंकि 14 सितंबर, 1949 को भारत की संविधान सभा द्वारा हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किए जाने के 75 वर्ष पूरे हो रहे हैं। यह अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि राजभाषा विभाग द्वारा इसे 'राजभाषा हीरक जयंती' के रूप में मनाया जा रहा है।

भारत अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, पुरातन सभ्यता और भाषिक विविधता के लिए दुनिया में विशिष्ट स्थान रखता है। क्षेत्रीय भाषाओं ने हमारी अतुलनीय सांस्कृतिक विविधता को आगे बढ़ाने और देशवासियों को भारतीयता के अटूट सूत्र में पिरोने का काम किया है। अतः हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं को भारतीय अस्मिता का प्रतीक कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान स्वराज, स्वदेशी और स्वभाषा पर विशेष बल दिया गया था। हिंदी ने तब से लेकर आज तक, देश की विविधता में एकता स्थापित करने और सामूहिक सद्भावना को सुदृढ़ करने का महती कार्य किया है। हिंदी की इसी शक्ति के कारण उन दिनों हिंदी की स्वीकार्यता को बढ़ावा देने वालों में लोकमान्य तिलक, महात्मा गाँधी, लाला लाजपत राय, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, राजगोपालाचारी एवं अन्य गैर-हिंदीभाषी महानुभावों की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी। आजादी के बाद हिंदी की इसी सर्वसमावेशी प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुए हमारे संविधान निर्माताओं ने हिंदी को संघ की राजभाषा का दर्जा दिया तथा संविधान की आठवीं अनुसूची में प्रमुख भारतीय भाषाओं को स्थान दिया।

हिंदी एक ऐसी भाषा है, जिसमें आपको देश की कई भाषाओं के तत्व मिल जाएँगे। इसका इतिहास लिखने वालों ने तो रासो ग्रंथों, सिद्धों-नाथों की वाणियों से लेकर भक्तिकाल के संत कवियों और खड़ी बोली तक इसकी परम्परा को माना है। कवि चंदबरदाई से लेकर महाकवि विद्यापति, ज्योतिरीश्वर ठाकुर, तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई, आंडाल, गुरू नानकदेव जी, संत रैदास, कबीरदास जी से लेकर आज तक कई साहित्यकारों व भाषाविदों ने भारतीय भाषाओं के माध्यम से हिंदी का मार्ग प्रशस्त किया। इसके विकास में उन असंख्य लोकभाषाकारों का भी अमूल्य योगदान है, जो गायन-वादन के द्वारा इस भाषा के आदिरूपों को जन-जन तक पहुँचाते रहे। हिंदी भाषा मैथिली, भोजपुरी, अवधी, ब्रज, हरियाणवी, राजस्थानी, मेवाती, गुजराती, छत्तीसगढ़ी, बघेली, कुँमाउनी, गढ़वाली जैसी मातृभाषाओं के समन्वित रूप से ही तो बनी है। मुझे खुशी है कि हिंदी भाषा इन मातृभाषाओं को अक्षुण्ण रखते हुए आगे बढ़ रही है और लगातार विकसित हो

रही है। आज जब राजभाषा के रूप में हिंदी अपनी 75वीं वर्षगाँठ पूरी कर रही है, तब हमें इसका यह इतिहास जरूर याद रखना चाहिए।

14 सितंबर, 1949 से लेकर लगातार राजभाषा के रूप में हिंदी के संवर्धन के अनेक काम हुए हैं। राजभाषा विभाग की विशाल यात्रा को पीछे मुड़ कर देखें, तो हमें कई महत्वपूर्ण पड़ाव दिखाई देते हैं, जहाँ इस विभाग ने जिम्मेदारीपूर्वक सरकारी तंत्र को भाषिक चेतना के प्रति प्रेरित किया है।

साल 1977 में श्रद्धेय **अटल बिहरी वाजपेयी जी** ने तत्कालीन विदेश मंत्री के रूप में पहली बार संयुक्त राष्ट्र की आम सभा को हिंदी में संबोधित कर राजभाषा का मान बढ़ाया। माननीय **प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी** जब अंतरराष्ट्रीय मंचों पर हिंदी भाषा में संबोधन देते हैं और भारतीय भाषाओं के उद्धरण देते हैं, तो समूचे देश में अपनी भाषा के प्रति गौरव के भाव को और बल मिलता है। बीते 10 वर्षों में हमारी सरकार ने राजभाषा को और भी समृद्ध व सक्षम बनाने के हर संभव कार्य किए हैं। 2018 में अनुवाद टूल कंठस्थ का लोकार्पण हो, 2020 में भारत की नई शिक्षा नीति में मातृभाषाओं को विशेष महत्व देने की अनुशंसा हो, केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर में आधिकारिक भाषाओं की सूची में कश्मीरी, डोगरी और हिंदी को शामिल करने के लिए विधेयक पारित करना हो, 2022 में हिंदी दिवस पर कंठस्थ 2.0 का लोकार्पण हो या साल 2021 से हर साल हिंदी दिवस पर 'अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन' आयोजित करना हो, सरकार राजभाषा व भारतीय भाषाओं के संरक्षण के प्रति प्रतिबद्ध है। साथ ही, संसदीय राजभाषा समिति ने अपने प्रतिवेदन का 12वाँ खंड भी माननीय राष्ट्रपति महोदया को सौंप दिया है।

राजभाषा में कार्यों को प्रोत्साहन देने हेतु हमने साल 2022 से संशोधित राजभाषा गौरव पुरस्कार योजना भी शुरू की है जिसके तहत ज्ञान-विज्ञान, अपराध शास्त्र अनुसंधान, पुलिस प्रशासन, संस्कृति, धर्म, कला, धरोहर एवं विधि के क्षेत्र में राजभाषा में मौलिक पुस्तक लेखन हेतु पुरस्कार दिए जाते हैं। साथ ही, राजभाषा विभाग ने डिजिटल शब्दकोश 'हिंदी शब्द सिंधु' का निर्माण भी किया है।

दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में यह और भी आवश्यक हो जाता है कि हिंदी एवं भारतीय भाषाओं के माध्यम से जन-जन तक संवाद स्थापित करते हुए राष्ट्र की प्रगति सुनिश्चित की जाए। यह अत्यंत आवश्यक है कि हम व्यापक रूप से सरल और सहज भाषा का प्रयोग करके राजभाषा और जनभाषा के बीच की दूरी को पाटें, ताकि देश के हर वर्ग का नागरिक देश की प्रगति से परिचित भी हो और लाभान्वित भी। इस तरह 'आत्मनिर्भर भारत' व 'विकसित भारत' के लक्ष्य को प्राप्त करने में हमारी भारतीय भाषाओं की सशक्त भूमिका रहने वाली है।

मुझे विश्वास है कि हिंदी दिवस एवं राजभाषा हीरक जयंती समारोह, मातृभाषाओं के प्रति राजभाषा विभाग की प्रतिबद्धता को और भी ऊँचाई देने का सार्थक माध्यम बनेगा। मैं राजभाषा विभाग के कार्यों की सराहना करते हुए हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

वंदे मातरम!

(अमित शाह)

नई दिल्ली
14 सितंबर, 2024

हिंदी दिवस एवं चतुर्थ अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन, 14-15 सितंबर 2024

राजभाषा हीरक जयंती

भारत मंडपम, नई दिल्ली

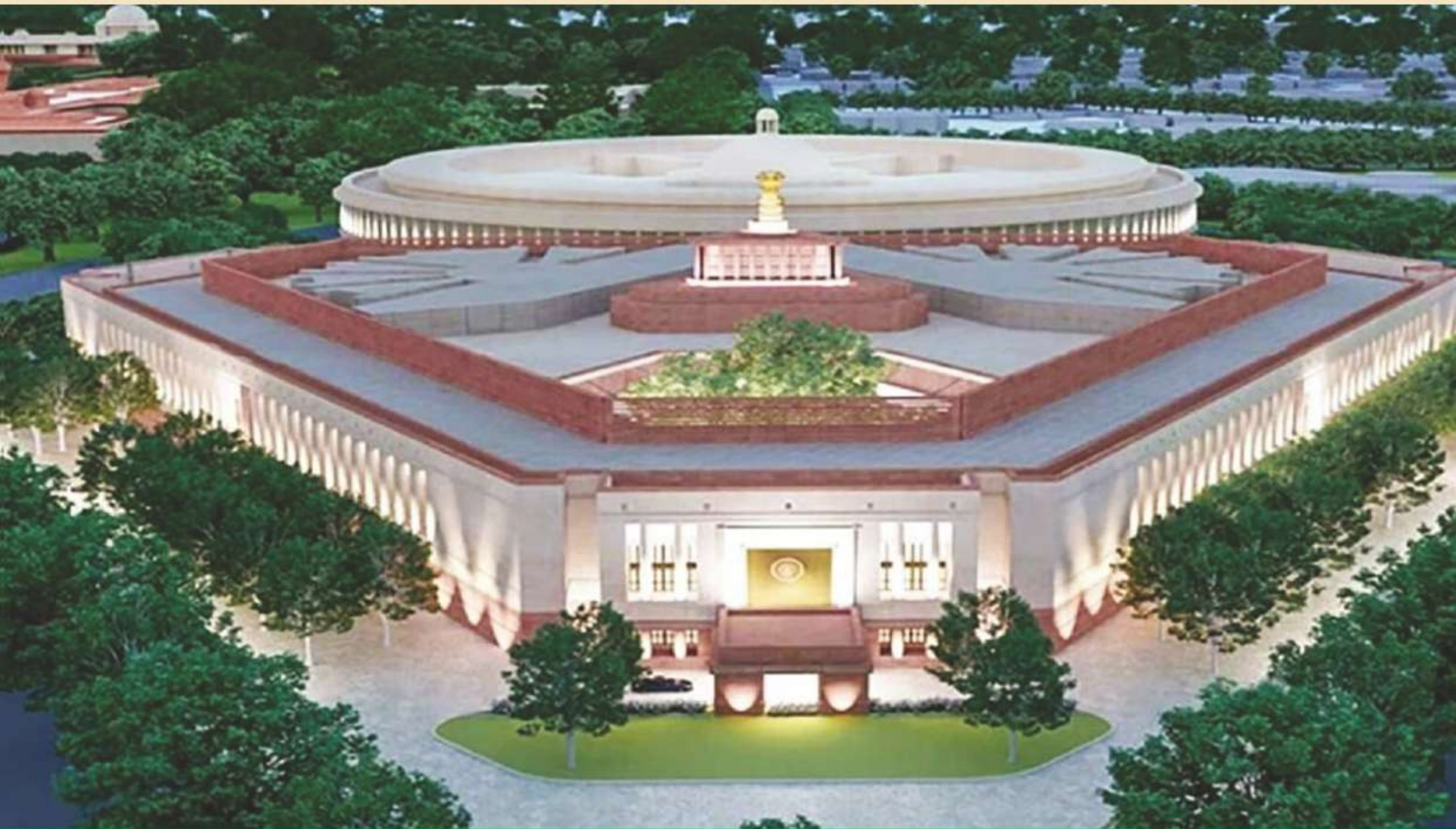

संरक्षक एवं मार्गदर्शक

श्रीमती तृप्ति सक्सेना

कार्यालय प्रमुख एवं वरिष्ठ उप महानिदेशक

उप संरक्षक

श्री पवन कुमार

उप महानिदेशक (प्रशासन)

संपादक

श्री शिव नारायण

उप महानिदेशक (एन.जी.एन.)

सह संपादक

श्री राजविंदर सिंह

निदेशक (एन.जी.एन.)

सहयोगीगण

श्री अमर दीप

श्री आकाश अग्रवाल

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकारों के निजी विचार हैं।

अनुक्रमणिका

क्रं. सं.	रचनाएँ	रचनाकार	पृष्ठ सं.
1.	सरस्वती वंदना		11
2.	दायित्व बोध	शशि मोहन	12
3.	पुरानी यादें	शिव नारायण	13
4.	दूरसंचार: बदलती दुनिया की रीढ़	योगेश गोयल	14
5.	जो जीवन की धूल चाट कर बड़ा हुआ है / मैं गाँव गया था	राजेश कुमार मीना	15
6.	योग का महत्व	जितेंद्र कुमार मीणा	16
7.	शाम—एक किसान	जितेंद्र कुमार मीणा	17
8.	सफलता का असली मतलब क्या है?	अमर दीप	18
9.	वो सुनो जो ना कहा गया हो	प्रवीण कुमार	19
10.	किसान की समस्या – महात्मा बुद्ध की कहानी	ओम प्रकाश यादव	20
11.	दोस्ती	चन्दन मेहता	21
12.	प्रेम और परमात्मा	सुशांत सिंह	22
13.	सत्य बोलना नहीं आसान	अमर दीप	23
14.	सफलता का असली मतलब क्या है?	प्रवेंद्र बघेल	24
15.	डिजिटल युग में पुस्तकों की भूमिका	आकाश अग्रवाल	25
16.	जीवन एक सफर	आकाश अग्रवाल	26
17.	उड़ान	राजकुमारी	27
18.	माँ	भरत	28
19.	प्रकृति की पुकार	भरत	28
20.	सपनों की डगर	अनीता कश्यप	29
21.	जिंदादिली की जिंदगी	दीपक पांडे	30
22.	राजभाषा नीति सबंधी प्रमुख निदेश		30-37
23.	दूरसंचार अभियांत्रिकी केंद्र, नई दिल्ली में हिंदी पखवाड़े का आयोजन		38

सरस्वती वंदना

वर दे, वीणा वादिनी वर दे !
वर दे, वीणा वादिनी वर दे।

प्रिय स्वतंत्र-रव अमृत-मंत्र नव
भारत में भर दे!
वर दे, वीणा वादिनी वर दे।

काट अंध-उर के बंधन-स्तर
बहा जननि,ज्योतिर्मय निर्झर
कलुष-भेद-तम हर प्रकाश भर
जगमग जग कर दे !
वर दे, वीणा वादिनी वर दे ।

नव गति, नव लय,ताल-छंद नव
नवल कंठ, नव जलद-मन्द्ररव
नव नभ के नव विहग-वृंद को
नव पर, नव स्वर दे !

वर दे, वीणा वादिनी वर दे !
वर दे, वीणा वादिनी वर दे ।

दायित्व बोध

प्रसंग रामायणकालीन है परन्तु आज के समय में पूर्णतः प्रासांगिक लगता है। आज जबकि अधिकारों की होड़ चारों तरफ दिखायी देती है, परन्तु दायित्व का अहसास नदारद है, ऐसे समय में रामायणकालीन यह प्रसंग दायित्व बोध कराने में प्रेरक होगा।

समुद्र पर सेतु निर्माण का कार्य चल रहा था, नल-नील जैसे कुशल अभियन्ताओं के निर्देशन में सम्पूर्ण वानर सेना के निरन्तर कठोर परिश्रम से निर्माण कार्य की गति तीव्र थी। सागर किनारे रामेश्वर की स्थापना के पश्चात् राम प्राणपण से सेतु निर्माण में लग गये थे। सेतु निर्माण के पश्चात् रावण पर विजय प्राप्त करने के लिए राम प्रतिबद्ध थे। समय तेजी से व्यतीत हो रहा था, श्री राम वनवास के चौदह वर्षों की अवधि से एक दिन भी अधिक होने पर, प्रिय भरत जैसे भाई से हाथ धोने का डर था। इस अल्पावधि में अभी कई कार्य करने थे। सम्पूर्ण दानवी शक्ति का विनाश कर निर्भयता का निर्माण कर, लोक कल्याणकारी समाज व्यवस्था का निर्माण करना उनका जीवन लक्ष्य था। इसके लिए अनुज लक्ष्मण समेत वे स्वयं कार्य का निरीक्षण कर रहे थे।

सेतु निर्माण कार्य का निरीक्षण करते समय श्रीराम की दृष्टि एक स्थान पर टिक गयी। देखा एक गिलहरी समुद्र जल से तन भिगोकर तट पर बिखरे रेत कणों में लोट पोट करती और फिर निर्माण स्थल पर जाकर अपने तन में लगी रेत झाड़ती। उसका यह क्रम कई दिनों से निरन्तर चल रहा था। देख तो वह कई दिनों से रहे थे, पर अनदेखा कर जाते थे, परन्तु आज ऐसा नहीं हो सका। देखा तो लक्ष्मण ने भी था, पर वह आज भी अनदेखा कर गये, पर प्रभु राम से ऐसा न हो सका। वह घन्टों तक उसे निहारते रहे। एक ही दिशा में निहारते राम से लक्ष्मण ने पूछ ही लिया कि 'तात' क्या देख रहे हैं।

तर्जनी अंगुली से इशारा करके राम ने कहा - देखो ! वह क्या कर रही है। वह सागर स्नान एवं रेत कणों में क्रीड़ा कर आनन्द ले रही है प्रभो। उत्तर था लक्ष्मण का।

नहीं। लक्ष्मण ऐसा नहीं है, उसके हृदय के भाव को नहीं समझ सके तुम। चलो निकट चल उससे ही पूछ लें। कहकर राम ने लक्ष्मण को साथ ले गिलहरी के निकट पहुंच राम ने पूछा "भद्रे क्या कर रही हो।"

"कुछ भी तो नहीं प्रभो। समाज निर्माण के इस विराट यज्ञ में यह नगण्य है। मेरी क्षमता ही क्या है? परन्तु इस कार्य में मेरा भी न्यूनाधिक योगदान हो, यह मानकर यथासम्भव कुछ कर रही हूं। यह कह गिलहरी सागर की ओर मुड़ चली।

उसे टोकते हुए राम ने पुनः कहा तुम्हारे जैसे अत्यन्त छोटे प्राणी द्वारा रेत के सौ-दो सौ कण डालने से इस विशाल कार्य में होगा भी क्या ?

यह सत्य है प्रभो । परन्तु मैं किसी आकांक्षा से नहीं कर रही हूं, यह तो समाज का कार्य है। राष्ट्र/समाज कार्य किसी वर्ग या एक व्यक्ति का नहीं होता वरन् अपनी योग्यता क्षमतानुसार जितना कर सके, सभी को करना चाहिए।

हां, बड़े लोगों की तरह बड़ा सहयोग न दे पाने का कष्ट/खेद मुझे है। गिलहरी ने उत्तर दिया। अत्याधिक श्रम के कारण गिलहरी के दुर्बल शरीर से रक्त रिस रहा था, जिसे देख राम द्रवित हो गये तथा एक हाथ की हथेली पर रखकर दूसरे हाथ से सहलाने लगे। राम के हाथों में पहुंच गिलहरी भी धन्य हो गयी। जिस प्रभु का सानिध्य एवं स्पर्श पाने के लिए कठिन तपस्या करके सन्त अपना जीवन लगा देते हैं, परन्तु गिलहरी के दायित्व बोध ने उसे सर्वोच्च स्थान पर बिठा दिया, लक्ष्मण के मुख से भी अनायास निकला। धन्य हो गिलहरी और धन्य है तुम्हारा दायित्व बोध।

समाज जीवन से लेकर हर क्षेत्र में आज दायित्व बोध की आवश्यकता है, इसी से हमारा समाज, संस्थान, हम स्वयं नई ऊचाई तक पहुंच सकते हैं और अपने लक्ष्य को सहजता से प्राप्त कर सकते है ।

शशि मोहन

उप महानिदेशक (आई .टी.)

पुरानी यादें

आज फिर मेरे साथ बीती पर कुछ लिख रहा हूँ जो कुछ इस तरह से है : आजादी से पहले हिंदुस्तान के बंटवारे का दर्द जैसा कि मेरी नानी ने मुझे सुनाया ....

ये बात 1970 के दशक की है । उस वक्त मैं स्कूल में पढ़ता था । मेरी दादी तो उस वक़्त नहीं रही थी परंतु नानी जिंदा थी । वह जब भी मेरे यहां गाँव में आती थी तो इस तरह की कहानी सुनती थी ।

मेरी नानी ने मुझे बताया कि आजादी से करीबन 15 दिन पहले उन्होंने और उनके परिवार ने क्या-क्या सहा । मेरी माँ के पिता का देहांत आजादी से 15 दिन पहले हो गया था । उनका पूरा परिवार जैसे अकेला सा हो गया था । माँ, चार बहने और तीन भाई समझ नहीं पा रहे थे कि क्या करें । उन दिनों हर जगह लड़ाई, खून-खराबे का माहौल था क्योंकि हिंदुस्तान को बांटा जा रहा था । हिन्दू और मुस्लिमों में भारत और पाकिस्तान बनने जा रहे थे।

हिन्दू और मुसलमान एक दूसरे से लड़ रहे थे ताकि उन्हें जायदा हिस्सा मिले । इस सबका नाम गाँव में "भग्गी" पड़ा क्योंकि जहां हिन्दू ज्यादा थे वहां से मुसलमान भाग रहे थे और जहां पर मुसलमान ज्यादा थे वहां से हिन्दू भाग रहे थे । जहां हिन्दू ज्यादा थे वहां वो मुसलमानों को मार रहे थे और जहां मुसलमान ज्यादा थे वो हिंदुओं को मार रहे थे । मेरी नानी राजस्थान के छोटे से गाँव राता बसाई में रहती थी और वहां ऐसे ही हालात थे । वहां पर मुसलमान ज्यादा थे इसलिए वहां हिंदुओं को मरने का डर बना हुआ था । ऐसे में मेरी नानी और बाकी सदस्यों का वहां रुकना ठीक नहीं था । इसलिए माँ की बड़ी बहन ने उन्हें अलवर में बुला लिया जहां वो रहती थी । इस तरह से मेरी नानी का परिवार, घर और अपना सबकुछ छोडकर अलवर आ गया । इस लड़ाई के कारण लाखों लोगों की जान गई और सबसे ज्यादा आम इंसान ने सहा ।

उस वक्त वहां पर हालत ठीक नहीं थे लेकिन अभी तक किसी को नहीं पता था कि हिंदुस्तान कैसे और किस तरह बंटने वाला था । 15 अगस्त, 1947 की रात को यह पता चलना था कि कौन सा हिस्सा भारत का होगा और कौन सा पाकिस्तान का । भारत में हिन्दू और पाकिस्तान में मुसलमान रहने वाले थे । आगे जाकर तो हिंदुस्तान तीन हिस्सों में बंट गया - भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश ।

ये सब सुन कर मुझे बहुत दुख हुआ क्योंकि अंग्रेजों से आजादी लेते-लेते हिंदुस्तान खुद बंट गया । हम लोग आजाद तो हो गए पर सब अलग हो गए । पहले सिर्फ हिंदुस्तान होता था लेकिन अब वह हमारे लिए भारत हो गया है ।

शिव नारायण
उप महानिदेशक (एन.जी.एन.)

दूरसंचार: बदलती दुनिया की रीढ़

दूरसंचार यानी टेलीकम्युनिकेशन – एक ऐसा शब्द जो आज के डिजिटल युग की नींव बन चुका है। एक समय था जब संदेश पहुँचाने के लिए कबूतरों का सहारा लिया जाता था, फिर चिट्ठियाँ आईं, और अब मोबाइल और इंटरनेट के ज़रिए हम पलक झपकते ही दुनिया के किसी भी कोने से जुड़ सकते हैं । यह चमत्कार दूरसंचार क्रांति का परिणाम है।

दूरसंचार का सफर

भारत में दूरसंचार की शुरुआत 1850 में हुई, जब कोलकाता और डायमंड हार्बर के बीच पहली टेलीग्राफ लाइन बिछाई गई। इसके बाद 1882 में पहली बार टेलीफोन सेवा शुरू हुई। पर असली क्रांति 1990 के दशक में आई , जब भारत ने दूरसंचार क्षेत्र को निजी कंपनियों के लिए खोला। मोबाइल फोन का चलन बढ़ा और इंटरनेट ने दुनिया को हमारी मुट्ठी में ला दिया।

5G की दस्तक

आज भारत 5G युग में कदम रख चुका है। 5G केवल तेज इंटरनेट नहीं, बल्कि यह तकनीक स्वास्थ्य, शिक्षा, उद्योग और कृषि जैसे क्षेत्रों में क्रांतिकारी बदलाव लाने में सक्षम है। इससे रियल टाइम डेटा ट्रांसफर संभव हुआ है, जिससे ऑटोमेशन, स्मार्ट सिटी, और ड्राइवरलेस गाड़ियाँ हकीकत बन रही हैं।

ग्रामीण भारत और दूरसंचार

दूरसंचार क्रांति का सबसे बड़ा लाभ ग्रामीण भारत को मिला है। जहाँ पहले सूचना और सेवाएँ पहुँचाना कठिन था, वहाँ अब मोबाइल नेटवर्क और इंटरनेट ने जीवन को सरल बना दिया है। किसान अब मौसम की जानकारी, मंडी भाव और कृषि सलाह एक क्लिक पर पा सकते हैं।

चुनौतियाँ और संभावनाएँ

हालाँकि, अभी भी नेटवर्क कवरेज, डेटा सुरक्षा और साइबर फ्रॉड जैसी चुनौतियाँ बनी हुई हैं। सरकार और कंपनियों को मिलकर इन समस्याओं का समाधान निकालना होगा। साथ ही, भारत में 'मेक इन इंडिया' के तहत स्वदेशी दूरसंचार उपकरणों और तकनीकों को विकसित करने पर भी ज़ोर दिया जा रहा है।

निष्कर्ष

दूरसंचार केवल संवाद का माध्यम नहीं रहा, यह आज के जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुका है। शिक्षा से लेकर व्यापार, चिकित्सा से लेकर मनोरंजन – हर क्षेत्र में इसकी भूमिका बेहद महत्वपूर्ण हो चुकी है। भविष्य में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT), और 6G जैसी तकनीकों के साथ दूरसंचार हमारी दुनिया को और भी ज्यादा स्मार्ट और जुड़ा हुआ बनाएगा।

योगेश गोयल
सहायक महानिदेशक

जो जीवन की धूल चाट कर बड़ा हुआ है

जो जीवन की धूल चाट कर बड़ा हुआ है
तूफ़ानों से लड़ा और फिर खड़ा हुआ है

जिसने सोने को खोदा लोहा मोड़ा है
जो रवि के रथ का घोड़ा है

वह जन मारे नहीं मरेगा
नहीं मरेगा

जो जीवन की आग जला कर आग बना है
फ़ौलादी पंजे फैलाए नाग बना है

जिसने शोषण को तोड़ा शासन मोड़ा है
जो युग के रथ का घोड़ा है

वह जन मारे नहीं मरेगा
नहीं मरेगा

मैं गाँव गया था

मैं अभी गाँव गया था
केवल यह देखने
कि घर वाले बदल गए हैं
या
अभी तक यह सोचते हैं
कि मैं बड़ा आदमी बन कर लौटूँगा।

रास्ते में सागौन पीले पड़ गए थे
शायद अपनी पढ़ाई के अंतिम वर्ष में रहे होंगे
उन्हें भविष्य की चिंता रही होगी
मेरा भविष्य

मेरे सीने में है और मेरे गाँव में
बेशरम की झाड़ियाँ और ज़्यादा हरी हो गई हैं
मैं खेतों में जाकर देखना चाहता था
कि कहीं बीस गुना पैदा करने की कोशिश में

मुझे गेहूँ के साथ तो
बो नहीं दिया गया है
और मैं सचमुच
गेहूँ के बीच उगा हुआ था

अब मेरे लिए
ज़्यादा ठहरना ठीक नहीं था।

लौट आया हूँ
पानवाला मामा
कहो कविराज कह कर
मुस्कुरा रहा है।

राजेश कुमार मीना
निजी सहायक

योग का महत्व

आज के तनावपूर्ण और व्यस्त जीवन में, हम अक्सर अपने शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य की उपेक्षा करते हैं। हम अपने कार्य, परिवार, और सामाजिक दायित्वों में इतने व्यस्त हो जाते हैं कि हम अपने स्वयं के कल्याण को पीछे छोड़ देते हैं। इस अंतहीन दौड़ में, हम थकान, चिंता, अवसाद, और कई शारीरिक बीमारियों के शिकार हो जाते हैं। लेकिन इस समस्या का एक समाधान है जो हजारों वर्षों से हमारे पास रहा है - वह है योग।

योग क्या है? : योग एक प्राचीन भारतीय अभ्यास है जो शरीर, मन और आत्मा के बीच संतुलन और एकता पर केंद्रित है। संस्कृत शब्द "योग" का अर्थ है "जोड़ना" या "एकजुट करना"। यह शारीरिक मुद्राओं (आसन), श्वास नियंत्रण (प्राणायाम), ध्यान, और नैतिक सिद्धांतों का एक समग्र अभ्यास है। योग का उद्देश्य केवल शारीरिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाना नहीं है, बल्कि मानसिक शांति, आत्म-जागरूकता और आध्यात्मिक उन्नति को भी बढ़ावा देना है।

योग के प्रकार:

1. हठ योग: शारीरिक शुद्धि, शक्ति और लचीलेपन पर केंद्रित।
2. राज योग: ध्यान और आत्म-साक्षात्कार पर केंद्रित।
3. कर्म योग: निस्वार्थ सेवा के माध्यम से आध्यात्मिक उन्नति।
4. भक्ति योग: भगवान के प्रति समर्पण और प्रेम।
5. ज्ञान योग: आत्म-ज्ञान के माध्यम से मुक्ति।
6. कुंडलिनी योग: आध्यात्मिक ऊर्जा के उत्थान पर केंद्रित।

शारीरिक लाभ:

1. लचीलापन बढ़ाता है: योगासन हमारी मांसपेशियों और जोड़ों की गतिशीलता बढ़ाते हैं।
2. शक्ति बढ़ाता है: सूर्य नमस्कारऔर वीरासन जैसे आसन शारीरिक बल बढ़ाते हैं।
3. संतुलन सुधारता है: वृक्षासन और गरुड़ासन से शरीर का संतुलन बेहतर होता है।
4. पाचन में सुधार: ट्विस्ट और फॉरवर्ड बेंड्स पाचन तंत्र को उत्तेजित करते हैं।
5. हृदय स्वास्थ्य: योग हृदय गति को नियंत्रित करता है और रक्तचाप को कम करता है।
6. श्वसन में सुधार: प्राणायाम फेफड़ों की क्षमता बढ़ाता है।
7. दर्द में राहत: योग पीठ दर्द, घुटने के दर्द और माइग्रेन में मदद करता है।

मानसिक और भावनात्मक लाभ:

1. तनाव कम करता है: योग कॉर्टिसोल (तनाव हॉर्मोन) के स्तर को कम करता है।
2. चिंता और अवसाद से राहत: नियमित योग अभ्यास से मूड बेहतर होता है।
3. एकाग्रता बढ़ाता है: ध्यान मानसिक फोकस को तेज करता है।
4. नींद की गुणवत्ता सुधारता है: शवासन और योग निद्रा अनिद्रा में मदद करते हैं।
5. आत्म-स्वीकृति बढ़ाता है: योग हमें अपने शरीर और मन के साथ सहज होने में मदद करता है।
6. भावनात्मक स्थिरता: योग भावनाओं को नियंत्रित करने में मदद करता है।
7. रचनात्मकता को बढ़ावा देता है: ध्यान दिमाग को साफ करता है, जिससे नए विचार आते हैं।

जीवन शैली में योग को शामिल करना:

1. सुबह जल्दी उठें: सूर्योदय के समय योगाभ्यास करें, जब मन शांत हो।
2. नियमितता बनाएं रखें: हर दिन थोडा-थोडा करके शुरू करें, फिर धीरे-धीरे बढ़ाएं।
3. सही मार्गदर्शन लें: एक योग्य शिक्षक से सीखें ताकि चोटों से बचा जा सके।
4. अपने स्तर के अनुसार चुनें: शुरुआती, मध्यम या उन्नत - अपने अनुरूप कक्षाएं ले।
5. विविधता लाएं: विभिन्न प्रकार के योग को मिलाएं ताकि सभी पहलुओं को लाभ मिले।
6. संतुलित आहार: ताजे फल, सब्जियां, साबुत अनाज और प्रोटीन का सेवन करें।
7. पर्याप्त नींद लें: एक नियमित नींद का कार्यक्रम बनाएं।
8. प्रकृति से जुड़ें: कभी-कभी बाहर योग करें - पार्क या समुद्र तट पर।
9. ध्यान को दैनिक दिनचर्या में शामिल करें: दिन में कुछ मिनट निकालें।
10. सकारात्मक दृष्टिकोण रखें: योग सिर्फ व्यायाम नहीं, यह एक जीवन शैली है।

आधुनिक जीवन में योग की प्रासंगिकता:

1. बैठने की आदतों से निपटना: डेस्क जॉब्स के कारण होने वाली समस्याओं को कम करता है।
2. डिजिटल डिटॉक्स: स्क्रीन से दूर होकर आंतरिक शांति पाने में मदद करता है।
3. काम-जीवन संतुलन: तनाव प्रबंधन तकनीकें हमें बेहतर संतुलन बनाने में मदद करती हैं।
4. सामाजिक संपर्क: योग कक्षाएं लोगों को जोड़ती हैं और एकांतवास को कम करती हैं।
5. व्यक्तिगत देखभाल: योग स्व-देखभाल और आत्म-प्रेम की अवधारणा को बढ़ावा देता है।

शाम—एक किसान

आकाश का साफ़ा बाँधकर
सूरज की चिलम खींचता
बैठा है पहाड़,
घुटनों पर पड़ी है नदी चादर-सी,

पास ही दहक रही है
पलाश के जंगल की अँगीठी
अंधकार दूर पूर्व में
सिमटा बैठा है भेड़ों के गल्ले-सा।

अचानक—बोला मोर।
जैसे किसी ने आवाज़ दी—
'सुनते हो'।
चिलम औंधी
धुआँ उठा—
सूरज डूबा
अँधेरा छा गया।

जितेंद्र कुमार मीणा
निजी सचिव

सफलता का असली मतलब क्या है?

आज 10वीं और 12वीं का रिजल्ट आया। बहुत से पेरेंट्स से बात हुई... किसी का बच्चा 93% लाया, कोई 94%, और कोई 70% या उससे कम। पर हैरानी की बात ये थी — कोई भी पूरी तरह खुश नहीं था। क्यों?

क्योंकि जिन बच्चों ने 93-94% लाए, उनके माँ-बाप को लगा —" अब आईआईटी निकलेगा या नहीं?" " इतना लाया है तो अब क्या टॉप करेगा?" और जिनके बच्चों ने 70% लाए, उनका दर्द था -" हमारा बच्चा तो एवरेज भी नहीं है, ये ज़िंदगी में क्या करेगा ?" बस यही सब सुनकर मैं सोच में पड़ गया। क्या वाकई यही है सफलता?

क्या सिर्फ मार्क्स ही सब कुछ हैं? क्या सिर्फ डॉक्टर या इंजीनियर बनना ही एकमात्र रास्ता है? हम माता-पिता अपने बच्चों से क्या चाहते हैं? क्या जो हम खुद न कर पाए, वो अब उनके कंधों पर रख देना चाहते हैं?

क्या कभी हमने रुक कर ये सोचा — " हम अपने समय में कितने प्रतिशत लाए थे ?" "हमसे क्या -क्या नहीं हुआ?" तो फिर आज हम अपने बच्चों से क्यों ये उम्मीद करते हैं कि वो हर जगह अव्वल आएं? क्या सिर्फ बड़ा पैकेज, बड़ी कंपनी, विदेश में नौकरी – यही है सफलता की परिभाषा? क्या आपने कभी अपने बच्चे से कहा — "कोई बात नहीं बेटा, जो भी करो, दिल से करो।"
"जो भी रास्ता चुनो, उसमें अपना 100% देना — बस उतना ही काफ़ी है।

"मैं आप सबसे कहना चाहता हूँ — अपने बच्चों को उनके रिज़ल्ट के बाद डाँटना नहीं... हौसला दो। मत कहिए —"तेरे से अच्छे तो शर्मा जी का बेटा है..." " क्या मुँह दिखाएँगे दुनिया को?" ऐसे शब्द बच्चों को तोड़ देते हैं। वो मुस्कुराते हैं सामने, पर अंदर से घुटते हैं। हर बच्चे की अपनी रफ्तार होती है। हर कोई डॉक्टर, इंजीनियर नहीं बन सकता — जैसे हर हाथ की पाँचों उंगलियाँ बराबर नहीं होतीं। उनसे तुलना मत कीजिए — ना किसी दोस्त से, ना किसी रिश्तेदार से, ना किसी टॉपर से। और सबसे ज़रूरी बात — ये 'पैकेज-पैकेज' की बातें उनके दिमाग में भरना बंद करिए। हर रोज़ ये मत कहिए — "बड़ी कंपनी में जाओ... विदेश जाओ... करोड़ों कमाओ..."

वरना एक दिन ऐसा आएगा कि आपके बुलाने पर भी वो वक्त नहीं निकाल पाएँगे। क्योंकि उन्हें सिर्फ पैसे की रेस में ही दौड़ना सिखाया गया है — जीना नहीं। उन्हें ये सिखाइए — रिश्तों की अहमियत क्या है। बड़ों का सम्मान क्या है। मूल्य क्या होते हैं। संस्कार किसे कहते हैं। ताकि वो ज़िंदगी में जो भी बने, पहले एक अच्छा इंसान बने।

और अब... मैं आप सबसे एक सवाल पूछना चाहता हूँ — आपके हिसाब से कौन है सफल? क्या आप मेरी बातों से सहमत हैं? क्या सफलता सिर्फ प्रतिशत, कॉलेज या पैकेज तक सीमित है? या फिर वो बच्चा सफल है — जो सच्चा है, मेहनती है, और दिल से जीता है?

अमर दीप
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

वो सुनो जो ना कहा गया हो

बहुत समय पहले की बात है । एक राजा ने अपने बेटे को अच्छा शासक बनाने के मकसद से एक मास्टर के पास भेजा दिया । मास्टर ने कुछ दिन अपने साथ रखने के बाद युवराज को एक साल के लिए जंगल में अकेले रहने के लिए भेज दिया । जब युवराज लौटे तो मास्टर ने पूछा, "बताओ तुमने जंगल में क्या सुना?"

"मैंने कोयल की कूक सुनी, नदियों की कल-कल सुनी, पत्तियों की सरसराहट सुनी, मधुमक्खियों की गुंजन सुनी, मैंने झींगुरों का शोर सुना, हवा की धुन सुनी..." युवराज अपना अनुभव सुनाता चला गया । जब युवराज ने अपनी बात पूरी कर ली तब मास्टर बोले, "अच्छा है, अब तुम एक बार फिर जंगल जाओ और जब तक तुम्हे कुछ नयी आवाजें ना सुनाई दे दें तब तक मत लौटना" ।

एक साल जंगल में बिताने के बाद युवराज अपने राज्य को लौटना चाहता था, पर मास्टर की बात को टाल भी नहीं सकता था, इसलिए वह बेमन ही जंगल की ओर बढ़ चला । कई दिन गुजर गए पर युवराज को कोई नयी आवाज़ नहीं सुनाई दी । वह परेशान हो उठा । उसने निश्चय किया कि अब वह हर आवाज़ को बड़े ध्यान से सुनेगा ।

फिर एक सुबह उसे कुछ अनजानी सी आवाजें हल्की-हल्की सुनाई देने लगी । इस घटना के कुछ दिनों बाद वह मास्टर के पास वापस लौटा और बोला, "पहले तो मुझे वही ध्वनियाँ सुनाई दी जो पहले देती थीं, लेकिन एक दिन जब मैंने बहुत ध्यान से सुनना शुरू किया तो मुझे वो सुनाई देने लगा जो पहले कभी नहीं सुनाई दिया था.... मुझे कलियों के खिलने की आवाज सुनाई देने लगी, मुझे धरती पर पड़ती सूर्य की किरणों, तितलियों के गीत, और घास द्वारा सुबह की ओस पीने की ध्वनियाँ सुनाई देने लगी...." ।

यह सुनकर मास्टर खुश हो गए और मुस्कुराकर बोले, "अनसुने को सुनने की क्षमता होना एक अच्छे राजा की निशानी है क्योंकि जब कोई शासक अपने लोगों के दिल की बात सुनना सीख लेता है, बिना उनके बोले, उनकी भावनाओं को समझ लेता है, जो दर्द बयाँ न किया गया हो उसे समझ लेता है, अपने लोगों की अनकही शिकायतों को सुन लेता है, केवल वही अपनी प्रजा का विश्वास जीत सकता है, कुछ गलत होने पर उसे समझ सकता है और अपने नागरिकों की वास्तविक आवश्यकताओं को पूरी कर सकता है " ।

दोस्तों, अगर हमें अपनी फील्ड का लीडर बनना है तो हमें भी वो सुनना सीखना चाहिए जो नहीं कहा गया है । यानी हमें उस युवराज की तरह बिलकुल अलर्ट हो कर अपना काम करना चाहिए और अपने साथ काम करने वालों की ज़रूरतों और भावनाओं का ख्याल रखना चाहिए तभी हम खुद को एक सच्चा लीडर की तरह स्थापित कर सकेंगे ।

प्रवीण कुमार
एम.टी.एस

किसान की समस्या – महात्मा बुद्ध की कहानी

एक बार एक गांव में एक किसान अपने दुखों से बहुत दुखी था। किसी ने उसको बताया कि तुम अपने दुखों के समाधान के लिए गौतम बुद्ध की शरण में जाओ, वह तुम्हारे सभी दुखों का समाधान कर देंगे। यह सुनकर वह किसान बुद्ध की शरण में चल पड़ा।

वह गौतम बुद्ध के पास पहुंचा और कहा - हे महात्मा मैं एक किसान हूं और अपनी जीविका चलाने के लिए खेती करता हूं। लेकिन कई बार वर्षा पर्याप्त नहीं होती है और मेरी फसल बर्बाद हो जाती है। किसान ने आगे कहा मैं विवाहित हूं, मेरी पत्नी मेरा ख्याल रखती है और मैं उससे प्रेम करता हूं, लेकिन कभी-कभी वह मुझे परेशान करती है। जिससे मुझे लगता है कि मैं उससे उकता गया हूं और मुझे लगता है कि अगर वह मेरे जीवन में नहीं होती तो कितना अच्छा होता। गौतम बुद्ध उस किसान की बात शांतिपूर्वक सुनते रहें।

किसान ने आगे कहना जारी रखा और बोला मेरे बच्चे भी है वो अच्छे हैं, लेकिन कभी-कभी वो मेरी बात नहीं मानते और उस समय मुझे बहुत क्रोध आता है, लगता है वो मेरे बच्चे हैं ही नहीं। किसान ऐसी ही बातें बुद्ध से करता गया और उसने अपने सारे दुखों को एक-एक करके बताया। गौतम बुद्ध ध्यानपूर्वक उस किसान की समस्याओं को सुनते गए, उन्होंने बीच में एक शब्द भी नहीं कहा। किसान अपनी समस्याएं बताता चला गया और आखिर में किसान के पास बताने को कोई भी समस्या नहीं बची।

अपना मन हल्का हो जाने के बाद वह चुप हो गया और बुद्ध के जवाब की प्रतीक्षा करने लगा लेकिन बुद्ध ने कुछ नहीं कहा। किसान अब और सब्र नहीं कर सकता था, वह आवाज़ ऊँची करते हुए बोला, "क्या आप मेरी समस्याओं का समाधान नहीं करेंगे?" "मैं तुम्हारी कोई सहायता नहीं कर सकता।", बुद्ध ने उत्तर दिया।

किसान को अपने कानों पर यकीन नहीं हुआ, "ये आप क्या कह रहे हैं, लोग तो बोलते हैं कि आप सभी के दुखों का निवारण कर देते है, तो क्या आप मेरे दुखों का निवारण नहीं करेंगे?"

बुद्ध ने कहा, "सभी के जीवन में कठिनाइयां होती हैं। तुम्हारे जीवन में कोई नई कठिनाई नहीं है। ये कठिनाइयां तो सभी के जीवन में आती जाती हैं। कभी मनुष्य सुखी होता है तो कभी दुःखी। कभी उसे पराए अपने लगते है और कभी उसे अपने लोग पराए लगने लगते है। ये जीवन चक्र है, इनसे कोई नहीं निकल सकता है। वास्तविकता में हमारा जीवन कठिनाइयों से भरा हुआ है। मेरा, तुम्हारा और सभी लोगों का जीवन समस्याओं से ग्रसित है। इसलिए मैं इन समस्याओं का समाधान नहीं कर सकता हूं।

यदि तुम किसी एक समस्या का उपाय कर भी लो तो उसके स्थान पर एक नई समस्या खड़ी हो जाएगी। यही जीवन का अटल सत्य है।

यह सुन कर किसान क्रोधित हो गया, बोला , "सब लोग कहते हैं कि आप महात्मा हैं, मैं यहां एक आस लेकर आया था कि आप मेरी सहायता करेंगे। अगर आप मेरी समस्याओं का समाधान ही नहीं कर सकते तो मेरा यहां आना व्यर्थ हुआ। इसका मतलब सभी लोग झूठ बोलते हैं, मैं बेकार ही आपके पास आया" । इतना बोलकर किसान उठ कर जाने लगा।

तभी बुद्ध ने कहा, "मैं तुम्हारी इन समस्याओं का समाधान तो नहीं कर सकता हूं, लेकिन हां मैं तुम्हारी एक दूसरी समस्या का समाधान कर सकता हूं।" किसान ने आश्चर्य से कहा, "इन समस्याओं के अलावा दूसरी समस्या, भला वह कौन सी समस्या है?

बुद्ध ने कहा, वह यह कि – तुम नहीं चाहते कि तुम्हारे जीवन में कोई समस्या हो।

इसी समस्या के कारण ही दूसरी कई समस्याओं का जन्म हुआ है। तुम इस बात को स्वीकार कर लो कि सभी के जीवन में समस्याएं होती हैं, कठिनाइयां होती हैं। तुम सोचते हो कि तुम इस दुनिया में सबसे ज्यादा दुःखी हो और तुम्हारे जितना कोई ओर दुःखी नहीं है! तुम अपने आस पास देखो, क्या वो लोग तुमसे कम दुःखी हैं?

तुम्हें अपना दुःख बड़ा लगता है लेकिन जो लोग तुम्हारे आस-पास रहते हैं उनको उनका दुःख बड़ा लगता है। इस दुनिया में सभी को अपना दुःख बड़ा लगता है। चाहे दुःख छोटा हो या फिर बड़ा हो लेकिन वह जिसके साथ घट रहा है, उसके लिए वह दुःख बड़ा प्रतीत होता है। अगर तुम ध्यानपूर्वक देखोगे तो समझ जाओगे कि यह जीवन सुख-दुःख से भरा हुआ है। इसको तुम कभी नहीं बदल सकते हो। लेकिन हाँ, तुम सुख – दुःख से ऊपर अवश्य उठ सकते हो, यह तुम्हारे लिए संभव है।

सुख और दुःख को हम आने से रोक नहीं सकते है लेकिन सुख और दुःख का हम पर कोई प्रभाव न पड़े ऐसी व्यवस्था हम कर सकते हैं और इसकी शुरुआत इस तथ्य को समझने के साथ शुरू होती है कि हम कुछ भी कर लें जीवन में सुख-दुःख आने ही आने हैं, लेकिन हमें उनसे विचलित नहीं होना चाहिए। इसलिए आज से तुम यह चाहना छोड़ दो कि तुम्हारे जीवन में कोई समस्या ही ना आये, और तब तुम जीवन में आने वाले सुख-दुःख को स्वयं में समा सकोगे। तूफ़ान के मध्य में भी शांत रह सकोगे और हर्षोल्लास के शोर में भी संतुलित रह पाओगे।"

किसान बुद्ध की चरणों में गिर पड़ा। वह समझ चुका था कि अब उसे क्या करना है।

मित्रों, यह जीवन सुख-दुःख से भरा हुआ है। ऐसे में यह सोचना गलत है कि दुःख कभी आये ही नहीं। इस कहानी में भगवान बुद्ध द्वारा कही गई बातें हमें दुःख से घबराने या सुख में अत्यंत उत्साहित होने की जगह एक संतुलित जीवन जीने का सन्देश देती हैं।

ओम प्रकाश यादव

एम.टी.एस

दोस्ती

दोस्ती वो रिश्ता है, जो शब्दों से नहीं बनता,
ये दिल से दिल का बंधन है, जो हर मोड़ पर चलता।
न रंग देखती, न जात-पात,
बस सच्चाई हो तो दोस्ती है साथ।

ग़म में हँसना सिखाए जो,
हर चोट पे मलहम लगाए जो।
वो दोस्त नहीं, फरिश्ता होता है,
जो हर पल सच्चा साथ निभाता है।

चन्दन मेहता

कार्यालय सहायक

प्रेम और परमात्मा

संतो की उपदेश देने की रीति-नीति भी अनूठी होती है । कई संत अपने पास आने वाले से ही प्रश्न करते हैं और उसकी जिज्ञासा को जगाते है; और सही-सही मार्गदर्शन कर देते है ।

आचार्य रामानुजाचार्य एक महान संत एवं संप्रदाय-धर्म के आचार्य थे । दूर-दूर से लोग उनके दर्शन एवं मार्गदर्शन के लिए आते थे । सहज तथा सरल रीति से वे उपदेश देते थे । एक दिन एक युवक उनके पास आया और पैर में वंदना करके बोला :

"मुझे आपका शिष्य बनना है, आप मुझे अपना शिष्य बना लीजिए" ।

रामानुजाचार्य ने कहा : "तुझे शिष्य क्यों बनना है ?" युवक ने कहा : "मेरा शिष्य होने का हेतु तो परमात्मा से प्रेम करना है" ।

संत रामानुजाचार्य ने तब कहा : "इसका अर्थ है कि तुझे परमात्मा से प्रीति करनी है परन्तु मुझे एक बात बता दे कि क्या तुझे तेरे घर के किसी व्यक्ति से प्रेम है ?"
युवक ने कहा : "ना, किसी से भी मुझे प्रेम नहीं" । तब फिर संतश्री ने पूछा : "तुझे तेरे माता-पिता या भाई-बहन पर स्नेह आता है क्या ?"

युवक ने नकारते हुए कहा ,"मुझे किसी पर भी तनिक मात्र भी स्नेह नहीं आता । पूरी दुनिया स्वार्थपरायण है, ये सब मिथ्या मायाजाल है । इसीलिए तो मैं आपकी शरण में आया हूँ"। तब संत रामानुज ने कहा : "बेटा, मेरा और तेरा कोई मेल नहीं । तुझे जो चाहिए वह मैं नहीं दे सकता "। यह सुनकर युवक स्तब्ध हो गया ।

उसने कहा : "संसार को मिथ्या मानकर मैंने किसी से प्रीति नहीं की । परमात्मा के लिए मैं इधर-उधर भटका । सब कहते थे कि परमात्मा के साथ प्रीति जोड़ना हो तो संत रामानुज के पास जा; पर आप तो इन्कार कर रहे है " ।

संत रामानुज ने कहा : "यदि तुझे तेरे परिवार से प्रेम होता, जिन्दगी में तूने तेरे निकट के लोगों में से किसी से भी स्नेह किया होता तो मैं उसे विशाल स्वरुप दे सकता था । थोड़ा भी प्रेमभाव होता, तो मैं उसे ही विशाल बनाकर के परमात्मा के चरणों तक पहुंचा सकता था ।

छोटे से बीज में से विशाल वटवृक्ष बनता है । परन्तु बीज तो होना चाहिए । जो पत्थर जैसा कठोर एवं शुष्क हो उस में से प्रेम का झरना कैसे बहा सकता हूँ ? यदि बीज ही नहीं तो वटवृक्ष कहाँ से बना सकता हूँ ? तूने किसी से प्रेम किया ही नहीं, तो तेरे भीतर परमात्मा के प्रति प्रेम की गंगा कैसे बहा सकता हूँ ?"

कहानी का सार ये है कि जिसे अपने निकट के भाई-बंधुओं से प्रेमभाव नहीं, उसे ईश्वर से प्रेम भाव नहीं हो सकता। हमें अपने आस पास के लोगों और कर्तव्यों से मुंह नहीं मोड़ सकते। यदि हमें आध्यात्मिक कल्याण चाहिए तो अपने धर्म-कर्तव्यों का भी उत्तम रीति से पालन करना होगा।

सुशांत सिंह
एम.टी.एस (अनुबंधित)

सत्य बोलना नहीं आसान

सत्य बोलना नहीं है आसान
सत्य से हर झूठ परेशान

सत्यवादी जग में है महान
सत्य का दुश्मन है ये जहान

सत्य के आगे झुक जाता सर
सत्य को किसी से ना है डर

हिम्मत से भरा है सत्य का घर
जगत में सत्य है सदैव अमर

सत्य को ना है किसी से बैर
सत्य से पंगा वाले की ना है खैर

सत्य के सामने ना है कोई गैर
सत्य से ना लेना कोई कहीं बैर

सत्य का बहुत ही कठिन है डगर
सत्य पथ राही होता है दिलेर

ना कोई चिन्ता ना है कोई फिकर
अजर है सत्य सत्य है अमर

सत्य की अपनी अलग है पहचान
सत्य का जगत में है बड़ा सम्मान

सत्य जो ना समझे वो है नादान
सत्यवादी जग में है युग युग में महान

अमर दीप
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

सफलता का असली मतलब क्या है?

कितना हँसी दौर था, कितने हँसी थे लोग
रूखी सूखी खा के भी कितने ख़ुश थे लोग
न कोई हिन्दू था न मुस्लिम न सिख ईसाई
अपने अपने मजहब में, कितने ख़ुश थे लोग
सब थे लोग मगर कितने भले लोग थे, लोग
आ उसी मोड़ पर, फिर चलें, जहाँ थे ऐसे लोग
मिलजुल के गूँथी थी बेणी,सखियों ने गाँव में
रस्सी में दे गए गाँठ,आ कर,पढ़े लिखे लोग
सुख की तलाश में कुछ,दुःख भी साथ आ गए
कुछ आगे बढ़ गए मगर पीछे रह गए बहुत लोग
तल्खियाँ तो थीं मगर सरहदों पर दुश्मनी न थी
अब के बदला मिज़ाज,कि दुश्मन हो गए लोग
मसला तो वहीं रहा,सरहदों पर मरते रहे लोग
ताबूत में बन सँवर कर, घर आते रहे लोग
शहर के लोगों से,कहीं बेहतर हैं गाँव के लोग
रखवाली में सरहदों की,मर खप गए मेरे लोग
ऐसी हुई तब्दीलियाँ, कि मिज़ाज बदल गया
दुनियाँ हुई क़रीब,मगर ख़ुद से दूर हो गए लोग ।।

प्रवेंद्र बघेल
एम.टी.एस

डिजिटल युग में पुस्तकों की भूमिका

21वीं सदी तकनीक और सूचना क्रांति की सदी है। आज हम डिजिटल युग में जी रहे हैं, जहाँ हर चीज़ इंटरनेट और स्क्रीन से जुड़ी हुई है। ऐसे समय में यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि क्या पुस्तकों का महत्व कम हो गया है? क्या किताबें अब सिर्फ अलमारियों की शोभा बनकर रह जाएँगी? उत्तर है – नहीं। बल्कि, डिजिटल युग ने पुस्तकों की भूमिका को नए आयाम दिए हैं।

पुस्तकों का बदलता स्वरूप

डिजिटल युग में पुस्तकों ने अपना रूप बदला है, पर उनकी आत्मा आज भी जीवित है। पहले जहाँ हम केवल छपी हुई किताबों को पढ़ते थे, आज हम ई-बुक्स, पीडीएफ और ऑडियो बुक्स के ज़रिए भी अध्ययन कर सकते हैं। अब एक मोबाइल या टैबलेट में हजारों पुस्तकें सहेजकर कहीं भी पढ़ा जा सकता है। यह तकनीकी विकास पढ़ने को और अधिक सुलभ और सुविधाजनक बनाता है।

ज्ञान तक त्वरित पहुँच

डिजिटल युग में पुस्तकें इंटरनेट के ज़रिए कुछ ही सेकंड में उपलब्ध हो जाती हैं। पहले जहाँ दुर्लभ किताबें पाने के लिए पुस्तकालयों की खाक छाननी पड़ती थी, अब वे गूगल बुक्स, किंडल या अन्य ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म्स पर सरलता से उपलब्ध हैं। इसने शिक्षा को लोकतांत्रिक बनाया है — अब किसी भी आर्थिक या भौगोलिक स्थिति का व्यक्ति किताबों से सीख सकता है।

नई पीढ़ी के लिए अनुकूलता

आज की पीढ़ी तकनीक के साथ पली-बढ़ी है। वे स्क्रीन पर अधिक समय बिताते हैं। ऐसे में अगर हम उन्हें डिजिटल प्रारूप में पुस्तकें पढ़ने को दें, तो उनमें पढ़ने की रुचि बढ़ सकती है। कई इंटरैक्टिव ई-बुक्स, वीडियो बुक्स और एनिमेटेड कहानियाँ बच्चों को किताबों की ओर आकर्षित करती हैं।

चुनौतियाँ और समाधान

डिजिटल युग में पुस्तकों की भूमिका महत्वपूर्ण है, लेकिन कुछ चुनौतियाँ भी हैं। स्क्रीन पर अधिक समय बिताने से आँखों पर असर पड़ता है, एकाग्रता कम होती है और कभी-कभी गहराई से पढ़ने की आदत भी प्रभावित होती है। इसका समाधान यह है कि हम डिजिटल और मुद्रित दोनों माध्यमों के बीच संतुलन बनाए रखें। खासकर गंभीर अध्ययन और साहित्यिक रसास्वादन के लिए छपी हुई पुस्तकों का महत्व आज भी सर्वोपरि है।

निष्कर्ष :

डिजिटल युग ने पुस्तकों को समाप्त नहीं किया, बल्कि उन्हें नया जीवन दिया है। आज की किताबें केवल कागज तक सीमित नहीं, वे डिजिटल स्क्रीन पर भी जीवित हैं। आवश्यकता इस बात की है कि हम तकनीक का उपयोग ज्ञान के प्रसार और पढ़ने की संस्कृति को बनाए रखने में करें। यदि हम पुस्तकों को अपने जीवन का हिस्सा बनाए रखें, तो चाहे वह डिजिटल हो या पारंपरिक, वे सदैव हमारा मार्गदर्शन करती रहेंगी।

जीवन एक सफर

जीवन एक अनमोल कहानी
हर मोड़ पर इसमें कुछ हैरानी ।
कभी हँसी तो कभी आंसू लाती,
हर सुबह एक नई दिशा दिखाती।

चलते जाओ, रुकना मत,
हर मुश्किल में खुद से मत हट।
जो थाम ले विश्वास का हाथ,
उसके लिए बनता है हर राह।

आकाश अग्रवाल
कार्यालय सहायक

उड़ान

चिड़िया सी छोटी आशाएँ
सपनों की गहरी शहनाई
मन के नभ में उड़ते अरमान
ले चलें मुझे कहीं दूर नजदीकों की छाई ।

छोटे-छोटे पंख हैं मेरे
पर हौसलों की कमी नहीं
रास्ते चाहे कठिन हों कितने
पर थकना अब ज़रूरी नहीं ।

हर सुबह एक संदेश लाती
हर रात एक सपना कहती
चलो चलें उस राह पे अब
जहाँ उम्मीदें बातों में बहतीं ।

दर्द सहा है, गिरी हूँ कई बार
पर रुकी नहीं, उठती गई बारंबार
क्योंकि जानती हूँ—अंधेरे के बाद
हर बार होता है उजाला अपार ।

मत रोक मुझे इन सीमाओं से
मैं बहता हुआ एक सपना हूँ
जो ठान लिया वो कर जाऊँ
मैं इंसान नहीं, एक विश्वास हूँ ।

राजकुमारी
निजी सहायक

माँ

माँ तेरी ममता की छाया,
जैसे शीतल पवन की माया।
तेरे आँचल की खुशबू में,
हर दर्द भी मीठा लगता आया।

तेरी लोरी की मिठास में,
अब भी नींद आ जाती है।
तेरे बिना ये जीवन अधूरा,
तेरे साथ ही हर खुशी पूरी है।

प्रकृति की पुकार

हरियाली की चादर ओढ़े,
धरती माँ हमें बुलाए।
नदियाँ, पर्वत, फूलों के बाग,
जीवन को सुंदर बनाए।

पर हम ही कर रहे विनाश,
कट रहे पेड़, सूख रहा घास।
उठो, अब तो जागो इंसान,
संभालो ये सुंदर प्रकृति का स्थान

भरत
एम.टी.एस (अनुबंधित)

सपनों की डगर

सपनों को देखो खुली आँखों से,
रुको नहीं इन राहों में झोकों से।
जो थाम ले भरोसे की रेखा,
वही पा ले सच्ची सफलता की लेखा।

मत डर भविष्य की धुंध से,
मत थक आज की दुविधा से।
चल पड़, विश्वास की नाव में,
हर तूफान झुकेगा तेरे भाव में।

जीवन एक अनमोल कहानी,
हर मोड़ पर इसमें कुछ हैरानी।
कभी हँसी तो कभी आंसू लाती,
हर सुबह एक नई दिशा दिखाती।

चलते जाओ, रुकना मत,
हर मुश्किल में खुद से मत हट।
जो थाम ले विश्वास का हाथ,
उसके लिए बनता है हर राह।

कभी हार मिले, तो घबराना नहीं,
कभी जीत हो, तो रुक जाना नहीं।
हर अनुभव कुछ सिखाता है,
जीवन यूँ ही आगे बढ़ता जाता है।
छोटे पलों में छिपा है सार,
खुश रहो, यही है असली उपहार।

अनीता कश्यप
कार्यालय सहायक

जिंदादिली की जिंदगी

जिंदादिली की जिंदगी
हर किसी के वश की बात नहीं
थोड़े को जो समझता बहुत
वहीं जीता चैन की जिंदगी

जो ताउम्र करता हाय! हाय !
उसके नसीब में जिंदादिली कहां
मगर, तनाव - दबाव के बावजूद
लोग हाय ! हाय ! से आते नहीं बाज

स्वार्थ के बाजार में नाचते नंगा
न खुद खुश रहते, न रहने देते
दिन-रात पैसा-पैसा करते
पैसा का उठाते नहीं आनंद

पेट काट-काट तिजोरी सजाते
मगर, भूल जाते खुद का ख्याल
हां, जिंदादिली की जिंदगी
हर के वश की बात नहीं

जिंदादिली के लिये रखना पड़ता
बड़ा दिल और खुला विचार
जो मन - दिमाग से आजाद नहीं
कैसे पायेगा, जिंदादिली की जिंदगी।

दीपक पांडे
एम.टी.एस (अनुबंधित)

राजभाषा नीति संबंधी प्रमुख निदेश

1. राजभाषा अधिनियम,1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत संकल्प, सामान्य आदेश, नियम, अधिसूचनाएं, प्रशासनिक व अन्य रिपोर्टें, प्रेस विज्ञप्तियां, संसद के किसी सदन या दोनों सदनों के समक्ष रखी जाने वाली प्रशासनिक तथा अन्य रिपोर्टें व सरकारी कागजात, संविदा, करार, अनुज्ञप्तियां, अनुज्ञापत्र, निविदा सूचनाएं और निविदा प्रपत्र द्विभाषिक रूप में, अंग्रेजी और हिंदी, दोनों में जारी किए जाएं । राजभाषा नियम, 1976 के नियम 6 के अंतर्गत ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले व्यक्ति का दायित्व यह सुनिश्चित करना होगा कि ऐसे दस्तावेज हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में तैयार, निष्पादित अथवा जारी किए जाएं ।

2. राजभाषा नियम, 1976 के नियम 5 के अनुसार केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी में प्राप्त पत्रादि का उत्तर हिंदी में ही दिया जाना है।

3. राजभाषा नियम, 1976 के नियम 10(4) के अनुसार केंद्र सरकार के जिन कार्यालयों के 80 प्रतिशत कार्मिकों ने हिंदी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया हो, उन कार्यालयों के नाम राजपत्र में अधिसूचित किए जाएं। इसके अंतर्गत अधिसूचित बैंकों की शाखाओं में निम्नलिखित कार्य हिंदी में किए जाएं:-

"ग्राहकों द्वारा हिंदी में भरे गए आवेदनों और अंग्रेजी में भरे गए आवेदनों पर ग्राहकों की सहमति से जारी किए जाने वाले मांग ड्राफ्ट, भुगतान आदेश, क्रेडिट कार्ड, डेबिट कार्ड, सभी प्रकार की सूचियां, विवरणियां, सावधि जमा रसीदें, चैक बुक संबंधी पत्रादि, दैनिक बही, मस्टररोल, प्रेषण बही, पास बुक, लॉग बुक में प्रविष्टियां, प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र, सुरक्षा एवं ग्राहक सेवा संबंधी कार्य, नये खाते खोलना, लिफाफों पर पते लिखना, कर्मचारियों के यात्रा भत्ते, अवकाश, भविष्य निधि, आवास निर्माण अग्रिम, चिकित्सा संबंधी कार्य, बैठकों की कार्यसूची, कार्यवृत्त आदि ।"

4. राजभाषा नियम, 1976 के नियम 8(4) के अनुसार केंद्र सरकार, ऐसे अधिसूचित कार्यालयों के हिंदी में प्रवीणता प्राप्त अधिकारियों/कर्मचारियों को टिप्पण, प्रारुपण और अन्य उन शासकीय कार्यों को केवल हिंदी में करने के लिए आदेश जारी कर सकती है, जो कि आदेश में विनिर्दिष्ट हों।

-12-

5. राजभाषा नियम, 1976 के नियम 11 के अनुसार केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों से संबंधित सभी मैनुअल, संहिताएं और प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, हिन्दी और अंग्रेजी में द्विभाषिक रूप में यथास्थिति, मुद्रित या साइक्लोस्टाइल किया जाएगा और प्रकाशित किया जाएगा। केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग किए जाने वाले रजिस्टरों के प्ररूप और शीर्षक हिन्दी और अंग्रेजी में होंगे। केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग के लिए सभी नामपट्ट, सूचना पट्ट, पत्रशीर्ष और लिफाफों पर उत्कीर्ण लेख तथा लेखन सामग्री की अन्य मदें हिन्दी और अंग्रेजी में लिखी जाएंगी और मुद्रित या उत्कीर्ण होंगी। तदनुसार, केंद्र सरकार के कार्यालयों से अपेक्षा है कि वे सभी मैनुअल, संहिताएं एवं प्रक्रिया संबंधी असांविधिक साहित्य से संबंधित अन्य प्रक्रियात्मक साहित्य अनुवाद के लिए केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो में भेजें।

6. राजभाषा नियम,1976 के नियम 12 के अनुसार केंद्र सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व है कि वह यह सुनिश्चित करे कि राजभाषा अधिनियम, राजभाषा नियमावली के प्रावधानों तथा इनके अधीन जारी किए गए निदेशों का समुचित रूप से अनुपालन हो तथा इस प्रयोजन से उपयुक्त एवं प्रभावकारी जांच बिंदु बनाए जाएं।

7. राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने केंद्रीय हिंदी समिति की 31वीं बैठक के कार्यवृत्त में माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा दिए गए सुझावों पर पुन: बल दिया है। ये सुझाव हैं:- सरकारी हिंदी और सामाजिक हिंदी के अंतर को कम करना, देश की दूसरी भाषाओं से हिंदी को और समृद्ध करने के लिए उपाय करना, दूसरी भाषाओं के अच्छे शब्दों को हिंदी में ग्रहण करना, दूसरी भारतीय भाषाओं से अच्छे शब्दों को खोजकर हिंदी भाषा में जोड़ना, हिंदी में अनुवाद सरल भाषा में सुनिश्चित करना जिससे सरकारी भाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में बाधक नहीं, सहायक हो।

8. राजभाषा विभाग ने भारत सरकार के सभी सचिवों/विभिन्न सरकारी संगठनों के प्रमुखों से आग्रह किया है कि जब वे प्रत्येक माह वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक की अध्यक्षता करें तो वे उनमें हिंदी में सरकारी काम-काज में हुई प्रगति की भी समीक्षा करें और अपने संगठन में राजभाषा अधिनियम तथा नियमों के विभिन्न उपबंधों के कार्यान्वयन के बारे में चर्चा करें। साथ ही, संयुक्त सचिव (प्रशासन)/संगठन के प्रशासनिक प्रमुख को हिंदी कार्यान्वयन तथा वर्ष की प्रत्येक तिमाही में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक की अध्यक्षता करने का उत्तरदायित्व सौंपा जाए।

9. कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि में राजभाषा का संवर्ग गठित होना चाहिए, जो कि कुल पदों के अनुरूप हो ।

10. मंत्रालयों/विभागों के अधीनस्थ कार्यालयों के हिंदी पदाधिकारियों को केंद्रीय सचिवालय राजभाषा सेवा संवर्ग के समान वेतनमान व पदनाम दिए जाएं।

11. अधीनस्थ सेवाओं की भर्ती परीक्षाओं में अंग्रेजी के अनिवार्य प्रश्न-पत्र को छोड़कर शेष विषयों के प्रश्न- पत्रों के उत्तर हिंदी में भी देने की छूट दी जाए और ऐसे प्रश्न-पत्र द्विभाषी रूप से, हिंदी तथा अंग्रेजी, दोनों भाषाओं में उपलब्ध कराए जाएं। साक्षात्कार या मौखिक परीक्षा में उम्मीदवारों को हिंदी में उत्तर देने की छूट दी जाए।

12. केंद्र सरकार के कार्यालयों द्वारा सभी सेवाकालीन, विभागीय तथा पदोन्नति परीक्षाओं (अखिल भारतीय स्तर पर परीक्षाओं सहित) में अभ्यर्थियों को प्रश्न पत्रों के उत्तर हिंदी में देने का विकल्प दिया जाए। प्रश्न पत्र अनिवार्यतः दोनों भाषाओं, हिंदी और अंग्रेजी में तैयार कराए जाएं। जहां साक्षात्कार लिया जाना हो, वहां अभ्यर्थियों को पूछे गए प्रश्नों का उत्तर हिंदी में देने की अनुमति दी जाए।

-14-

13. सभी प्रकार की वैज्ञानिक/तकनीकी संगोष्ठियों तथा परिचर्चाओं आदि में वैज्ञानिकों आदि को राजभाषा हिंदी में शोध पत्र पढ़ने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित किया जाए। उक्त शोध पत्र संबंधित मंत्रालय/विभाग और कार्यालय आदि के मुख्य विषय से संबंधित हों।

14. केंद्रीय सरकार के सभी मंत्रालय/विभाग/कार्यालय आदि हिंदी संगोष्ठियों का आयोजन करें।

15. 'क' तथा 'ख' क्षेत्रों में सभी प्रकार का प्रशिक्षण, चाहे वह अल्पावधि का हो अथवा दीर्घावधि का, सामान्यतः हिंदी माध्यम से हो । 'ग' क्षेत्र में प्रशिक्षण देने के लिए प्रशिक्षण सामग्री हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में तैयार कराई जाए और प्रशिक्षणार्थी की मांग के अनुसार हिंदी या अंग्रेजी में उपलब्ध कराई जाए।

16. राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा कोई भी गैर-सरकारी संस्था केंद्र सरकार के कर्मचारियों को राजभाषा का प्रशिक्षण देने के लिए अधिकृत नहीं की गई है। राजभाषा विभाग के अंतर्गत प्रशिक्षण केंद्र पहले से ही देश भर में काम कर रहे हैं जो केंद्र सरकार के अधिकारियों व कर्मचारियों को विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण निःशुल्क देते हैं एवं राजभाषा पर विचार-विमर्श के लिए कार्यशालाओं का आयोजन करते हैं। राजभाषा विभाग के निर्देशों के अनुसार केंद्र सरकार के सभी कार्यालयों द्वारा संबंधित कार्यालयों में राजभाषा के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए कार्यशालाएं आयोजित की जाती हैं। राजभाषा विभाग की वेबसाइट पर 'लीला' राजभाषा के माध्यम से अंग्रेजी के अतिरिक्त 14 भारतीय भाषाओं के माध्यम से हिंदी भाषा का प्रशिक्षण ऑनलाइन दिए जाने की सुविधा उपलब्ध है। अतः गैर-सरकारी संस्थाओं द्वारा आयोजित किए जा रहे राजभाषा के प्रशिक्षण एवं कार्यशालाओं में भाग लेने के लिए सरकारी कोष से अनावश्यक धन खर्च करना उचित नहीं है।

17. विभिन्न कार्यालयों में हिंदी में कार्य करने में आ रही कठिनाइयों को दूर करने के लिए हिंदी कार्यशालाओं के आयोजन के संबंध में नए दिशा-निर्देश जारी किए गए हैं। नए दिशा-निर्देशों के अनुसार कार्यशाला की न्यूनतम अवधि एक कार्य दिवस की होगी। कार्यशाला में न्यूनतम दो तिहाई समय कार्यालय से संबंधित विषयों पर हिंदी में कार्य करने का अभ्यास करवाने में लगाया जाए।

18. केंद्र सरकार के कार्यालयों की मांग पर केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान द्वारा वीडियो कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से भी हिंदी भाषा, हिंदी टंकण एवं हिंदी आशुलिपि का प्रशिक्षण दिया जाता है।

19. केंद्र सरकार के कार्यालयों में जब तक हिंदी टंककों व हिंदी आशुलिपिकों से संबंधित निर्धारित लक्ष्य प्राप्त नहीं कर लिए जाते, तब तक उनमें केवल हिंदी टंकक व हिंदी आशुलिपिक ही भर्ती किए जाएं।

20. अनुवाद कार्य तथा राजभाषा नीति के कार्यान्वयन से जुड़े सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो में अनिवार्य अनुवाद प्रशिक्षण हेतु नामित किया जाए। ऐसे अधिकारियों/कर्मचारियों को भी अनुवाद के प्रशिक्षण के लिए नामित किया जा सकता है, जिन्हें स्नातक स्तर पर हिंदी-अंग्रेजी दोनों भाषाओं का ज्ञान हो तथा जिनकी सेवाओं का उपयोग कार्यालय द्वारा अनुवाद कार्य के लिए किया जा सकता है।

21. अनुवादकों को, मानक शब्दकोश (अंग्रेजी-हिंदी व हिंदी-अंग्रेजी) तथा अन्य तकनीकी शब्दावलियों के रूप में सहायक सामग्री उपलब्ध कराई जाए।

22. भारतीय प्रशासनिक सेवा और अन्य अखिल भारतीय सेवाओं के अधिकारियों के लिए लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी, मसूरी में प्रशिक्षण के दौरान हिंदी भाषा का प्रशिक्षण अनिवार्य रूप से दिया जाता है ताकि सरकारी कामकाज में वे इसका प्रयोग कर सकें। तथापि, अधिकांश अधिकारी सेवा में आने के पश्चात सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग नहीं करते। इससे उनके अधीन कार्य कर रहे अधिकारियों/कर्मचारियों में सही संदेश नहीं जाता। परिणामस्वरूप, सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग अपेक्षित मात्रा में नहीं हो पाता। केंद्र सरकार के कार्यालयों के वरिष्ठ अधिकारियों का यह संवैधानिक दायित्व है कि वे सरकारी कामकाज में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करें। इससे उनके अधीन कार्य कर रहे अधिकारियों/कर्मचारियों को प्रेरणा मिलेगी तथा राजभाषा नीति के अनुपालन में गति आएगी।

23. केंद्र सरकार के सभी कार्यालय हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए चलाई गई विभिन्न प्रोत्साहन योजनाओं का अपने संबद्ध एवं अधीनस्थ कार्यालयों में भी व्यापक प्रचार-प्रसार करें ताकि अधिक से अधिक अधिकारी/कर्मचारी इन योजनाओं का लाभ उठा सकें और सरकारी कामकाज में अधिक से अधिक कार्य हिंदी में हो।

24. केंद्र सरकार के सभी कार्यालय अपने दायित्वों से संबंधित विषयों से संबधित शब्द भंडार को समृद्ध करने के लिए आवश्यक कदम उठाएं।

25. केंद्र सरकार के कार्यालय अपने कार्यालय में हिंदी में कार्य का माहौल तैयार करने के लिए हिंदी पत्रिकाओं का प्रकाशन कर रहे हैं। इन पत्रिकाओं में कार्यालय की सामान्य गतिविधियों तथा उस कार्यालय के कामकाज से संबंधित मौलिक आलेख प्रकाशित किए जाएं। साथ ही राजभाषा नीति के प्रमुख प्रावधानों का भी उल्लेख अवश्य हो। केंद्र सरकार के कार्यालयों से अपेक्षा की जाती है कि वे इन पत्रिकाओं के ई-वर्जन तैयार करें और इन्हें राजभाषा विभाग द्वारा उपलब्ध कराए गए प्लेटफॉर्म "ई-पत्रिका पुस्तकालय" पर अपलोड करें ताकि गृह-पत्रिकाएं पाठकों को सहज तरीके से प्राप्त हो सकें।

26. यह देखा गया है कि अनेक विभागों द्वारा वेबसाइट पर या तो सूचना हिंदी में नहीं दी जाती या कुछ मामलों में यह पूर्णतया हिंदी में उपलब्ध नहीं है। अतः वेबसाइट हिंदी में विकसित और नियमित रूप से अद्यतित करवाएं।

27. राजभाषा विभाग द्वारा केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान के माध्यम से हर वर्ष कंप्यूटर पर हिंदी में काम करने के लिए 5 दिवसीय बेसिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करवाया जाता है। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों में अधिक से अधिक अधिकारियों/ कर्मचारियों को नामित करें। प्रशिक्षण कार्यक्रम पूरा होने के बाद प्रशिक्षु कंप्यूटर पर हिंदी में काम कर सकेंगे। कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान की वेबसाइट www.chti.rajbhasha.gov.in पर उपलब्ध है।

28. राजभाषा विभाग द्वारा मौलिक रूप से हिंदी में पुस्तक लेखन को प्रोत्साहित करने एवं राजभाषा हिंदी को बढ़ावा देने के उद्देश्य से "राजभाषा गौरव पुरस्कार" दिए जाते हैं। राजभाषा विभाग द्वारा वर्ष 2022-23 से संशोधित **"राजभाषा गौरव पुरस्कार योजना"** लागू की गई है। इस योजना के अंतर्गत अब भारत के नागरिकों को निम्नलिखित पुरस्कार दिए जाएंगे:-

(क) हिंदी में ज्ञान-विज्ञान संबंधी मौलिक पुस्तक लेखन हेतु राजभाषा गौरव पुरस्कार।

(ख) न्यायालयिक विज्ञान, पुलिस, अपराधशास्त्र अनुसंधान और पुलिस प्रशासन पर हिंदी में मौलिक पुस्तक लेखन हेतु राजभाषा गौरव पुरस्कार।

(ग) संस्कृति, धर्म, कला, धरोहर आदि पर हिंदी में मौलिक पुस्तक लेखन हेतु राजभाषा गौरव पुरस्कार।

(घ) विधि के क्षेत्र में हिंदी में मौलिक पुस्तक लेखन हेतु राजभाषा गौरव पुरस्कार।

राजभाषा के प्रयोग में बेहतर प्रगति दर्ज करने वाले मंत्रालय/विभाग, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम, बोर्ड/ स्वायत्त निकाय/ ट्रस्ट आदि, राष्ट्रीयकृत बैंक तथा हिंदी गृह पत्रिकाओं के लिए "राजभाषा कीर्ति पुरस्कार" राजभाषा विभाग द्वारा दिए जाते हैं। इन दोनों पुरस्कार योजनाओं की जानकारी राजभाषा विभाग की वेबसाइट www.rajbhasha.gov.in पर उपलब्ध है।

29. राजभाषा विभाग ने अपनी वेबसाइट पर विभिन्न संस्थाओं के लिंक उपलब्ध कराए हैं जिनके माध्यम से इन संस्थाओं की शब्दावली देखी जा सकती है। इस संबंध में यदि कार्यालयों द्वारा कोई अपनी शब्दावली तैयार की गई है तो वे उसे राजभाषा विभाग से साझा करें ताकि अन्य कार्यालय भी लाभान्वित हो सकें।

30. राजभाषा विभाग की वेबसाइट पर "ई-सरल हिंदी वाक्यकोश" शीर्षक के अंतर्गत सामान्यत: अंग्रेजी में प्रयोग होने वाले वाक्यों के हिंदी अनुवाद दिए गए हैं जिनके प्रयोग से अधिकारी फाइलों पर सामान्य टिप्पणियां आसानी से हिंदी में लिख सकते हैं।

-18-

31. अंतरराष्ट्रीय संधियों और करारों को अनिवार्य रूप से हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में तैयार कराया जाए। विदेशों में निष्पादित संधियों और करारों के प्रामाणिक अनुवाद तैयार कराकर रिकॉर्ड के लिए फाइल में रखे जाएं।

32. हिंदीतर राज्यों में बोर्ड, साइन बोर्ड, नामपट्ट तथा दिशा संकेतकों के लिए क्षेत्रीय भाषा, हिंदी तथा अंग्रेजी, इसी क्रम में, प्रयोग की जानी चाहिए ।

33. प्रशिक्षण और कार्यशालाओं सहित राजभाषा हिंदी संबंधी कार्य कर रहे अधिकारियों/कर्मचारियों को कार्यालय में बैठने के लिए अच्छा व समुचित स्थान एवं अन्य आवश्यक सुविधाएं भी उपलब्ध कराई जाएं ताकि वे अपने दायित्वों का निर्वाह ठीक तरह से कर सकें।

34. हमें अपने कार्य-व्यवहार में आम जीवन में प्रचलित शब्दों के प्रयोग पर बल देना चाहिए ताकि सामान्य नागरिक सरकारी नीतियों/ कार्यक्रमों के बारे में सरल हिंदी में जानकारी प्राप्त कर सकें।

दूरसंचार अभियांत्रिकी केंद्र, नई दिल्ली में हिंदी पखवाड़े का आयोजन

दूरसंचार अभियांत्रिकी केंद्र, नई दिल्ली में 14 से 30 सितंबर, 2024 तक हिंदी पखवाड़ा का आयोजन सफलतापूर्वक किया गया । 14 सितंबर का अवकाश होने के कारण, कार्यालय में हिंदी पखवाड़े के उदघाटन समारोह का आयोजन 17 सितंबर, 2024 को डॉ. अब्दुल कलाम सभागार में किया गया । उदघाटन समारोह में परंपरागत सरस्वती पूजा व दीप प्रज्वलित कर श्रीमती तृप्ति सक्सेना, वरिष्ठ उप महानिदेशक, टी.ई.सी. द्वारा हिंदी पखवाड़ा-2024 का विधिवत उदघाटन किया गया । इस अवसर पर श्रीमती सक्सेना जी ने माननीय गृह मंत्री, भारत सरकार श्री अमित शाह जी, द्वारा हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में जारी संदेश से सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को अवगत कराया और हिंदी दिवस की शुभकामनाएं दी तथा हिंदी दिवस की महता पर प्रकाश डाला । अध्यक्षा महोदया द्वारा पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में बढ़-चढ़कर भाग लेने तथा इस पखवाड़े के दौरान ही नहीं अपितु पूरे वर्ष हिंदी में ही कार्य करने हेतु सभी से आग्रह किया गया ।

मंचासीन श्री शिव नारायण, उप महानिदेशक (एन.जी.एन.) ने हिंदी दिवस के इस शुभ अवसर पर सभी को हिंदी दिवस की बधाई दी तथा हिंदी के महत्व और उसकी बढ़ती लोकप्रियता के संदर्भ में अपने विचार रखे । श्री शिव नारायण जी ने हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित की जाने वाली प्रतियोगिताओं के बारे में विस्तार से बताया तथा सभी से प्रतियोगिताओं में बढ़-चढ़कर भाग लेने की अपील की ।

कार्यालय में हिंदी को बढ़ावा देने तथा अधिकारियों एवं कर्मचारियों में हिंदी के प्रति रूचि सृजित करने के उद्देश्य से हिंदी पखवाड़ा के दौरान कुल 09 प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । प्रतियोगिताओं का विवरण इस प्रकार है :

1. हिंदी निबंध लेखन (राजपत्रित अधिकारियों के लिए) ।
2. हिंदी निबंध लेखन (राजपत्रित कर्मचारियों के लिए) ।
3. हिंदी टिप्पण व मसौदा लेखन ।
4. हिंदी व्याकरण ज्ञान ।
5. अनुवाद(हिंदी से अंग्रेज़ी तथा अंग्रेज़ी से हिंदी) ।
6. स्वरचित मौलिक कविता लेखन ।
7. अंताक्षरी (केवल हिंदी साहित्य से संबंधित) ।
8. प्रश्न मंच ।
9. हिंदी में उत्कृष्ट कार्य प्रतियोगिता ।

(हिंदी में कार्य को बढ़ावा देने हेतु - दिनांक 05 सितंबर, 2024 से 25 सितंबर, 2024 की अवधि में हिंदी में सबसे ज्यादा कार्य करने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों को पुरस्कृत किया)

इन प्रतियोगिताओं में कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

हिंदी पखवाड़े के समापन समारोह का आयोजन डॉ. अब्दुल कलाम सभागार में दिनांक 30 सितंबर, 2024 को किया गया । श्रीमती तृप्ति सक्सेना, वरिष्ठ उप महानिदेशक, टी.ई.सी. द्वारा सरस्वती पूजा व दीप प्रज्वलन कर हिंदी पखवाड़ा के समापन समारोह की विधिवत शुरुआत की गई।

हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित, प्रश्न मंच प्रतियोगिता को छोड़कर, प्रत्येक प्रतियोगिता के विजेताओं को क्रमश: प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार तथा 3 सांत्वना पुरस्कार दिये गए। सभी पुरस्कार विजेताओं को वरिष्ठ उप महानिदेशक, टी.ई.सी. द्वारा प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया गया तथा पुरस्कार राशि उनके खाते में रोकड़ अनुभाग द्वारा ऑनलाइन जमा (बैंक) करवा दी गयी ।

अपने अध्यक्षीय संबोधन में श्रीमती सक्सेना जी ने प्रतियोगिताओं के पुरस्कार विजेताओं को बधाई दी एवं हिंदी पखवाड़ा के आयोजन में योगदान देने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों का धन्यवाद किया । अंत में अध्यक्षा महोदया द्वारा उपस्थित अधिकारियों/कर्मचारियों से आग्रह किया गया कि सभी अधिकारी/कर्मचारी हिंदी में काम करें और राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सार्थक प्रयास करें ।

मंचासीन श्री शिव नारायण, उप महानिदेशक (एन.जी.एन.) ने सभी पुरस्कार विजेताओं को बधाई दी । श्री शिव नारायण जी ने श्रीमती तृप्ति सक्सेना, वरिष्ठ उप महानिदेशक, टी.ई.सी. का धन्यवाद करते हुए, समारोह की अध्यक्षता करने, सफलतापूर्वक संपन्न कराने हेतु अपना बहुमूल्य समय देने के लिए आभार व्यक्त किया। अंत में श्री शिव नारायण जी ने हिंदी पखवाड़े के सफल आयोजन पर प्रसन्नता जाहिर की तथा कार्यालय के सभी कार्मिकों का मुख्यत: एन.जी.एन. प्रभाग, कार्मिक और प्रशासन प्रभाग के कार्मिकों का धन्यवाद किया गया जिन्होंने इस पखवाड़े के आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और सभी अधिकारियों/कर्मचारियों से आग्रह किया कि वे अपना सारा काम हिंदी में करें ।

क्र.सं.	प्रतियोगिता का नाम	विजेता का नाम	पदनाम	प्राप्त स्थान
1	निबंध (राजपत्रित अधिकारियों के लिए)	श्री नरेन्द्र चोबे	निदेशक	प्रथम पुरस्कार
2		श्री शशि मोहन	उप महानिदेशक	द्वितीय पुरस्कार
3		श्री योगेश गोयल	स.म.अ.दू.	तृतीय पुरस्कार
4		श्री शत्रुघ्न सिंह	सहायक निदेशक	सांत्वना पुरस्कार
5		श्री प्रशान्त जेमिनी	सहायक निदेशक	सांत्वना पुरस्कार
6		श्री नीतेश कुमार मीना	क.दू.अधिकारी	सांत्वना पुरस्कार
7	निबंध (अराजपत्रित कर्मचारियों के लिए)	श्री रवि कुमार	वरिष्ठ लेखाकार	प्रथम पुरस्कार
8		श्री प्रवीण कुमार	एम.टी.एस.	द्वितीय पुरस्कार
9		श्री राजेश कुमार मीना	निजी सहायक	तृतीय पुरस्कार
10		श्रीमती नूपुर शर्मा	निजी सहायक	सांत्वना पुरस्कार
11		श्रीमती राजकुमारी	निजी सहायक	सांत्वना पुरस्कार
12		श्री ओम प्रकाश यादव	एम.टी.एस.	सांत्वना पुरस्कार
13	हिंदी व्याकरण ज्ञान	श्री शत्रुघ्न सिंह	सहायक निदेशक	प्रथम पुरस्कार
14		श्री रवि कुमार	वरिष्ठ लेखाकार	द्वितीय पुरस्कार
15		श्री प्रवेन्द्र बघेल	एम.टी.एस.	तृतीय पुरस्कार
16		श्री राजेश कुमार मीना	निजी सहायक	सांत्वना पुरस्कार
17		श्री नरेन्द्र चोबे	निदेशक	सांत्वना पुरस्कार
18		श्रीमती शोना ग्रोवर	सहायक निदेशक	सांत्वना पुरस्कार

19	हिंदी टिप्पण व मसौदा लेखन	श्री योगेश गोयल	स.म.अ.दू.	प्रथम पुरस्कार
20		श्री नरेन्द्र चौबे	निदेशक	द्वितीय पुरस्कार
21		श्री प्रवीण कुमार	एम.टी.एस.	तृतीय पुरस्कार
22		श्री ओम प्रकाश यादव	एम.टी.एस.	सांत्वना पुरस्कार
23		श्रीमती शोना ग्रोवर	सहायक निदेशक	सांत्वना पुरस्कार
24		श्री शत्रुघ्न सिंह	सहायक निदेशक	सांत्वना पुरस्कार
25	अनुवाद	श्री नरेन्द्र चौबे	निदेशक	प्रथम पुरस्कार
26		सुश्री मुदिता चंद्रा	स.म.अ.दू.	द्वितीय पुरस्कार
27		श्री योगेश गोयल	स.म.अ.दू.	तृतीय पुरस्कार
28		श्री शत्रुघ्न सिंह	सहायक निदेशक	सांत्वना पुरस्कार
29		श्री राघव पुरवार	स.म.अ.दू.	सांत्वना पुरस्कार
30		श्री प्रवीण कुमार	एम.टी.एस.	सांत्वना पुरस्कार
31	स्वरचित मौलिक कविता लेखन	श्री रवि कुमार	वरिष्ठ लेखाकार	प्रथम पुरस्कार
32		श्री संजय भारद्वाज	सहायक निदेशक	द्वितीय पुरस्कार
33		सुश्री मुदिता चंद्रा	स.म.अ.दू.	तृतीय पुरस्कार
34		श्री शत्रुघ्न सिंह	सहायक निदेशक	सांत्वना पुरस्कार
35		श्री प्रवीण कुमार	एम.टी.एस.	सांत्वना पुरस्कार
36		श्री योगेश गोयल	स.म.अ.दू.	सांत्वना पुरस्कार
37	अंताक्षरी (केवल हिंदी साहित्य से संबंधित)	श्री शिव चरण	अनुभाग अधिकारी	प्रथम पुरस्कार
38		श्री प्रवेन्द्र बघेल	एम.टी.एस.	द्वितीय पुरस्कार
39		श्री राजेश कुमार मीना	निजी सहायक	तृतीय पुरस्कार
40		श्री चितरंजन कुमार	जे.एस.ए.	सांत्वना पुरस्कार
41		श्री योगेश गोयल	स.म.दू.अ.	सांत्वना पुरस्कार
42		श्री नूपुर शर्मा	निजी सहायक	सांत्वना पुरस्कार
43	हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए	श्री ओम प्रकाश यादव	एम.टी.एस.	प्रथम पुरस्कार
44		श्री योगेश गोयल	स.म.दू.अ.	द्वितीय पुरस्कार

हिंदी पखवाड़ा 2024 पुरस्कार वितरण

बधाईयां

बधाईयां

बधाईयां

बधाईयां

बधाईयां

बधाईयां

बधाईयां

बधाईयां

बधाईयां

बधाईयां

बधाईयां

हिंदी पखवाड़ा

14 सितंबर – 30 सितंबर, 2024

मेरी भाषा मेरा गौरव

हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित प्रतियोगिताएं

एक झलक

हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित प्रतियोगिताएं

एक झलक

एक झलक

हिंदी कार्यशालाएं

दूरसंचार अभियांत्रिकी केंद्र की वार्षिक गृह पत्रिका का विमोचन

दूरसंचार अभियांत्रिकी केंद्र की वर्ष 2023 की वार्षिक गृह पत्रिका "टी.ई.सी. संचारिका" का विमोचन करते हुए कार्यालय प्रमुख एवं वरिष्ठ उप महानिदेशक, टी.ई.सी., श्रीमती तृप्ति सक्सेना, साथ में दाएं श्री शिव नारायण, उप महानिदेशक (एन.जी.एन.) और बाएं श्री पवन गुप्ता, उपमहानिदेशक (प्रशासन) ।

हिंदी पखवाड़ा 2024

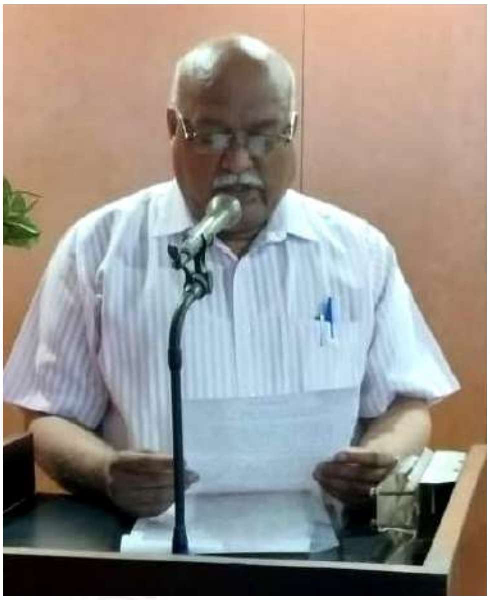

समापन

आई.एस.ओ. 9001:2015

दूरसंचार विभाग

दूरसंचार अभियांत्रिकी केन्द्र

खुर्शीद लाल भवन, जनपथ, नई दिल्ली-110001
वेबसाईट : www.tec.gov.in

क्षेत्रीय कार्यालयः

पूर्वी क्षेत्र, कोलकाता

प्रथम तल, दूरसंचार क्यूए बिल्डिंग, ईपी एण्ड जीपी ब्लॉक,
सॉल्ट लेक, सेक्टर 5, कोलकाता-700091

पश्चिमी क्षेत्र, मुम्बई

द्वितीय तल, डी विंग, बीएसएनएल प्रशासनिक भवन,
जुहू रोड, शान्ता क्रूज (वेस्ट) मुम्बई-400054

दक्षिणी क्षेत्र, बेंगलुरू

द्वितीय मंजिल, जया नगर टेलीफोन एक्सचेंज,
9 वां मेन, चौथा ब्लॉक, जयानगर, बेंगलुरू-560011

उत्तरी क्षेत्र, नई दिल्ली

गेट नं. 5, खुर्शीद लाल भवन, जनपथ, नई दिल्ली-110001